WESTERN PHILOSOPHY

LEIBNITZ - CONCEPT OF SUBSTANCE
लाइबनितज़ - द्रव्य-विचार

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons. Students)

लाइबनितज़ ने अपने द्रव्य-विचार के लिये देकार्ते और स्पिनोज़ा के द्रव्य विचार को आधार बनाया पर उनके विचारों को असंगत बताते हुए वे उनसे भिन्न विचार रखते हैं।अपने द्रव्य सम्बन्धी विचारों के प्रतिपादन से पूर्व लाइबनितज़ ने देकार्ते और स्पिनोज़ा के द्रव्य-विचार का खण्डन किया है।

देकार्ते ने अपने दर्शन में आत्मा, ईश्वर और जड़ जगत,तीन सत्ताओं को स्थापित कर ईश्वर को निरपेक्ष और अन्य दो को सापेक्ष माना है।इस प्रकार उन्होंने द्वैतवाद की स्थापना की है।लाइबनितज़ ने देकार्ते के इस मत की 'चेतना आत्मा का मौलिक धर्म है' का खण्डन करते हुए यह कहा है कि यदि यह मान लिया जाय कि चेतना आत्मा का मौलिक धर्म है तो क्या जब हम गहरी निद्रा में सोए रहते हैं या किसी कारणवश अचेतन हो जाते हैं तब हमारी आत्मा जो हमारे अंदर अंतरभूत रहती है वह लुप्त हो जाती है यदि यह सत्य है तो देकार्ते का यह कथन मान्य होगा की चेतना आत्मा का मौलिक धर्म है अन्यथा नहीं। इस प्रकार यदि चेतना आत्मा का मौलिक धर्म है तो ऐसा क्यों होता है कि हम पूर्व जीवन की अनुभूतियों को अपने इस जीवन में नहीं पाते हैं अतः देकार्ते की मान्यता संगत पूर्ण नहीं है। देकार्ते ने जड़ का मौलिक धर्म विस्तार माना पर वह भी तर्कपूर्ण नहीं है। इसका खंडन करते हुए लाइबनितज़ ने कहा कि देकार्ते के अनुसार द्रव्य का अर्थ उस पदार्थ से है जो अविभाज्य हो अन्यथा वह सत्य नहीं है। कोई भी जड़ पदार्थ जिसका अस्तित्व देश में है तो वह अवश्य ही अविभाज्य है। यदि हम किसी जड़ पदार्थ का विभाजन करते जाएं तो अंततः हम एक ऐसे स्थान पर पहुंचते हैं जिसके आगे उसका विभाजन असंभव हो जाता है क्योंकि वह पदार्थ शून्य हो जाता है। चुकी इन्हीं विस्तार सुनने पदार्थों से जड़ अथवा भूतत्व निर्मित है इसलिए कहा जा सकता है कि जब किसी पदार्थ के आवश्यक रचनात्मक तत्व ही विस्तार शून्य हो तो उस पदार्थ को कैसे विस्तार युक्त माना जा सकता है।लाइबनितज़ ने देकार्ते के इस जड़ पदार्थ है की आलोचना करते हुए कहा कि देकार्ते ने जिन तर्कों के आधार पर जड़ पदार्थ की सत्ता प्रमाणित करने का प्रयास किया है वे अत्यंत ही दुर्बल हैं, अच्छा होता यदि उन्होंने इसके लिए प्रयास ही नहीं किया होता(The argument by which Descartes seeks to demonstrate the existence of of material things is week it would have been better therefore not to try)।देकार्ते ने अद्वैत की जगह द्वैतवाद की मदद ली थी पर उनके विचारों में मन तथा शरीर, जड़ तथा चेतन के बीच सही सामाधन नहीं हो पाया था।लाइबनितज़ का कहना है कि जड़ तथा चेतन, शरीर और मन में क्रिया-प्रतिक्रिया सम्भव नहीं है।द्वैतवाद से चित-अचित के पारस्परिक सम्बन्ध की व्याख्या सम्भव नहीं है।

लाइबनितज़, देकार्ते के विचारों के खण्डन के पश्चात स्पिनोजा के एकतत्ववाद का भी खण्डन करने की कोशिश करते हैं।स्पिनोजा ने ईश्वर केअद्वैत रूप का प्रतिपादन किया है जहाँ स्पिनोजा का ईश्वर निर्गुण एवम निर्विशेष है।स्पिनोजा का यह भी कहना है कि जड़ सब कुछ है जो चेतना नहीं और चेतना उन सबका बहिष्कार करती है जो जड़ है।अब प्रश्न यह उठता है कि एक दूसरे का बहिष्कार करने वाले गुण एक साथ एक द्रव्य में कैसे रह सकते हैं ?इस तरह यह कहा जा सकता है कि स्पिनोजा का द्रव्य सम्बन्धी विचार असंगत है।

लाइबनितज़ ने देकार्ते और स्पिनोजा के द्रव्य सम्बन्धी विचारों को असंगत बताने के पश्चात यह बतलाते हैं कि द्रव्य वह शक्ति है जो पूर्णतः स्वतन्त्र है तथा इस शक्ति की भावना के लिये अन्य शक्ति की भावना की आवश्यकता नहीं है।लाइबनितज़ के अनुसार द्रव्य वह है जिसकी सत्ता अपने आप पर आश्रित हो और जिसमें स्वतंत्र क्रिया हो।वह सभी प्रकार के परिणामों का आधार हो।जगत में कोई ऐसी वस्तु या तथ्य नहीं है जिसमें शक्ति निहित न हो।

लाइबनितज़ ने माना है कि जगत का सार तत्व (Essence) शक्ति ही है जो अविनाशी, नित्यतथा अविभाज्य है।जिसे उन्होंने 'चिदणु' (Monad) के नाम से विभूषित किया है।चिदणु नाम उन्होंने परमाणुवादियों से लिया है इससे प्रभावित भी थे पर वे इसे स्वीकार नहीं कर पाये।परमाणुवाद की यह मान्यता है कि प्रकृति का प्रत्येक सावयव पदार्थ निरवयव पदार्थों के योग से बनता है, सावयव भौतिक पदार्थ विभाज्य होते हैं जिन्हें परमाणु कहा जाता है।लाइबनितज़ का चिदणु इससे भिन्न है। परमाणु

बिंदु भौतिक है जबकि लाइबनितज़ का चिदणु अभौतिक है परमाणु बिंदु विभाज्य है जबकि चिदणु अविभाज्य है। लाइबनितज़ के अनुसार किसी भी भौतिक पदार्थ का न्यूनतम भाग परमाणु नहीं हो सकता क्योंकि जड़ का स्वभाव या गुण विस्तार है। यदि न्यूनतम भाग जड़ है तो उसमें विस्तार गुण भी है, यदि उसमें विस्तार गुण है तो वह विभाज्य भी है। लाइबनितज़ अणु का विभाजन स्वीकार नहीं करते वे अविभाज्य परमाणु है जो चिदात्मक है।